Dr. RANJEET KUMAR

Dept. of History

H.D.Jain College, Ara.

B. A. ,Semester -6 Unit- 4,(MJC-6)

रूस में साम्यवाद: बोल्शेविक क्रांति
(Communism in Russia: The Bolshevik Revolution)

बीसवीं शताब्दी की सबसे निर्णायक और परिवर्तनकारी घटनाओं में 1917 की बोल्शेविक क्रांति का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस क्रांति ने न केवल रूस की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक संरचना को पूरी तरह बदल दिया, बल्कि पूरी दुनिया को साम्यवाद का एक व्यावहारिक मॉडल भी दिया। रूस में साम्यवाद का उदय किसी एक घटना का परिणाम नहीं था, बल्कि यह दीर्घकालीन सामाजिक असमानताओं, आर्थिक शोषण, राजनीतिक दमन, युद्ध की विभीषिका और वैचारिक संघर्षों का संयुक्त परिणाम था।

बोल्शेविक क्रांति ने जारशाही व्यवस्था का अंत, पूंजीवादी ढांचे को चुनौती, और सर्वहारा वर्ग की सत्ता की स्थापना का दावा किया। यह पहली बार था जब मार्क्सवादी विचारधारा को किसी बड़े देश में सत्ता के स्तर पर लागू किया गया।

क्रांति से पूर्व रूस की स्थिति:-

(क) राजनीतिक स्थिति: निरंकुश जारशाही

1917 से पहले रूस पर रोमानोव वंश का शासन था। अंतिम जार निकोलस द्वितीय एक निरंकुश शासक थे।

- जार के पास असीमित शक्तियां थीं
- संसद (ड्यूमा) नाममात्र की थी
- राजनीतिक दलों पर दमन
- प्रेस और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अभाव

राज्य पूरी तरह पुलिस और गुप्तचर तंत्र के सहारे चलता था। जनता की राजनीतिक भागीदारी लगभग शून्य थी।

(ख) सामाजिक स्थिति: वर्ग विभाजन
रूसी समाज तीव्र वर्ग असमानताओं से ग्रस्त था।
1. उच्च वर्ग
- जमींदार
- चर्च के अधिकारी
- शाही परिवार

2. मध्य वर्ग
- व्यापारी
- बुद्धिजीवी
- शिक्षक

3. निम्न वर्ग (बहुसंख्यक)

- किसान (लगभग 80%)
- मजदूर

किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। वे भूमि के मालिक नहीं थे और भारी करों के बोझ तले दबे थे।

(ग) आर्थिक स्थिति: पिछड़ापन और शोषण
रूस औद्योगिक रूप से पश्चिमी यूरोप से काफी पीछे था।
- उद्योग सीमित क्षेत्रों तक सिमटे थे
- मजदूरों को कम मजदूरी
- 12–14 घंटे का कार्य
- कोई सामाजिक सुरक्षा नहीं

पूंजीपति वर्ग छोटा था, लेकिन श्रमिकों का शोषण अत्यधिक था।

(घ) प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव
1914 में रूस का प्रथम विश्व युद्ध में प्रवेश स्थिति को और बिगाड़ गया।
- भारी जनहानि
- खाद्यान्न संकट
- महंगाई
- सेना में असंतोष

युद्ध ने जारशाही की अक्षमता को उजागर कर दिया।

वैचारिक पृष्ठभूमि: मार्क्सवाद और रूसी समाजवाद
(क) कार्ल मार्क्स का प्रभाव
कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स ने समाज के विकास को वर्ग संघर्ष के रूप में देखा।
- मार्क्सवाद के मुख्य सिद्धांत:
- इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है
- पूंजीवाद का अंत निश्चित है
- सर्वहारा वर्ग क्रांति करेगा
- वर्गहीन समाज की स्थापना होगी

(ख) रूस में समाजवादी आंदोलन
रूस में समाजवादी विचारों का प्रसार बुद्धिजीवियों और मजदूरों के बीच हुआ।
रूसी सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी (RSDLP) की स्थापना 1898 में हुई।

(ग) बोल्शेविक और मेन्शेविक विभाजन (1903)
1903 में पार्टी दो भागों में बंट गई:

A. बोल्शेविक **(**बहुमत**)**

- नेता: व्लादिमीर लेनिन
- पेशेवर क्रांतिकारियों की पार्टी
- सशस्त्र क्रांति में विश्वास

B. मेन्शेविक **(**अल्पमत**)**

- लोकतांत्रिक सुधारों में विश्वास
- व्यापक सदस्यता
- धीरे-धीरे समाजवाद

1905 की क्रांति: एक पूर्वाभ्यास:-
1905 की क्रांति को 1917 की क्रांति का "पूर्वाभ्यास" कहा जाता है।
कारण:

- रूस-जापान युद्ध में हार
- आर्थिक संकट
- "ब्लडी संडे" (शांतिपूर्ण प्रदर्शन पर गोलीबारी)

परिणाम:

- ड्यूमा की स्थापना
- कुछ नागरिक अधिकार
- लेकिन जारशाही बनी रही

यह क्रांति असफल रही, लेकिन जनता को संगठित होने का अनुभव मिला।

1917 की फरवरी क्रांति:-
(क) कारण

- युद्ध से थकान
- खाद्य संकट
- मजदूर हड़ताल
- सेना का विद्रोह

(ख) घटनाक्रम
फरवरी 1917 में पेट्रोग्राद में मजदूरों की हड़ताल शुरू हुई। सेना ने गोली चलाने से इंकार कर दिया।

(ग) परिणाम

- जार निकोलस द्वितीय का त्यागपत्र
- जारशाही का अंत
- अस्थायी सरकार की स्थापना

अस्थायी सरकार और द्वैध सत्ता:-
अस्थायी सरकार में उदारवादी और मेन्शेविक शामिल थे।
लेकिन साथ ही सोवियत (मजदूर परिषदें) भी शक्तिशाली थीं।
इसे द्वैध सत्ता (Dual Power) कहा गया।
अस्थायी सरकार की असफलताएं:

- युद्ध जारी रखा
- भूमि सुधार नहीं
- महंगाई और बेरोजगारी

लेनिन की वापसी और अप्रैल थीसिस:-
अप्रैल 1917 में लेनिन स्विट्जरलैंड से रूस लौटे।
उनकी अप्रैल थीसिस में प्रमुख नारे थे:

- "सारी सत्ता सोवियतों को"
- युद्ध का अंत
- भूमि किसानों को
- कारखाने मजदूरों को

यह कार्यक्रम जनता में अत्यंत लोकप्रिय हुआ।

अक्टूबर क्रांति **1917** (बोल्शेविक क्रांति):-
(क) नेतृत्व

- व्लादिमीर लेनिन

- लियोन ट्रॉट्स्की

(ख) घटना
24–25 अक्टूबर 1917 को बोल्शेविकों ने पेट्रोग्राद में प्रमुख सरकारी भवनों पर कब्जा कर लिया।
विंटर पैलेस पर आक्रमण हुआ और अस्थायी सरकार को गिरा दिया गया।

(ग) महत्व
इतिहास की पहली समाजवादी सरकार
सत्ता मजदूरों और किसानों के नाम

साम्यवादी सरकार की प्रारंभिक नीतियां:-
(क) शांति की नीति
- जर्मनी से ब्रेस्ट-लिटोव्स्क संधि (1918)
- रूस युद्ध से बाहर

(ख) भूमि सुधार
- जमींदारी समाप्त
- भूमि किसानों में वितरण

(ग) उद्योगों का राष्ट्रीयकरण
- कारखाने राज्य नियंत्रण में
- बैंक और रेलवे राष्ट्रीयकृत

गृहयुद्ध और रेड आर्मी:-
1918–1921 के बीच गृहयुद्ध हुआ।
- रेड आर्मी (बोल्शेविक)
- व्हाइट आर्मी (राजशाही समर्थक)

ट्रॉट्स्की ने रेड आर्मी का संगठन किया।
अंततः बोल्शेविक विजयी हुए।

युद्ध साम्यवाद और उसकी विफलता:-
- युद्ध के दौरान लागू नीति:
- अनिवार्य अनाज अधिग्रहण
- निजी व्यापार निषेध

परिणाम:
- भुखमरी
- किसान विद्रोह

नई आर्थिक नीति (NEP):-
1921 में लेनिन ने नई आर्थिक नीति लागू की।

मुख्य बिंदु:
- सीमित निजी व्यापार
- किसानों को प्रोत्साहन
- अर्थव्यवस्था में सुधार

सोवियत संघ की स्थापना (1922):-
1922 में रूस, यूक्रेन, बेलारूस आदि मिलकर
सोवियत समाजवादी गणराज्यों का संघ (USSR) बना।

बोल्शेविक क्रांति का ऐतिहासिक महत्व:-

(क) रूस में परिवर्तन

- जारशाही का अंत
- समाजवादी राज्य
- शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार

(ख) विश्व पर प्रभाव

- साम्यवाद का वैश्विक प्रसार
- चीन, क्यूबा, वियतनाम पर प्रभाव
- शीत युद्ध की नींव

आलोचनात्मक मूल्यांकन:-

सकारात्मक पक्ष:

- सामाजिक समानता का प्रयास
- श्रमिक अधिकार

नकारात्मक पक्ष:

- एकदलीय तानाशाही
- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर रोक
- हिंसा और दमन

निष्कर्ष

बोल्शेविक क्रांति केवल सत्ता परिवर्तन नहीं थी, बल्कि यह एक वैचारिक क्रांति थी। इसने इतिहास की दिशा बदल दी। यद्यपि इसके आदर्श और व्यवहार में अंतर रहा, फिर भी यह आधुनिक विश्व राजनीति की सबसे प्रभावशाली घटनाओं में से एक रही।